परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ में

मैं धन्य हो गया

9 जून। पूज्य आचार्यवर ने आज सालोदा के प्रायः सभी जैन घरों का स्प र्ा करते हुए वाटी के लिए प्रस्थान किया। मार्गवर्ती सगरून गांव में भी पूज्यवर पधारे। गांव में भ्रमण के दौरान मोहनसिंह नामक वृद्ध भाई ने आचार्यवर के चरण स्पर्श किए। आचार्यवर ने उन्हें नशामुक्ति हेतु प्रेरित किया। उन्होंने तत्काल जीवन भर के लिए बीड़ी पीने का परित्याग कर दिया।

सगरून गांव से मुख्य मार्ग पर पहुंचते ही आचार्यवर के चरण सामने स्थित पीपल के वृक्ष के नीचे बैठे अनेक ग्रामीणों की ओर मुड़ गए। वहां बैठे ग्रामीणों ने मुनिव न्द के संकेत पर खड़े होकर पूज्यवर के दर्शन किए। आचार्यवर के पूछने पर अनेक ग्रामीणों ने नशा करने की बात स्वीकार की। आचार्यवर ने उन्हें नशे की गिरफ्त से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया। आचार्यवर की पावन प्रेरणा से प्रभावित ग्रामीण इसके लिए तुरन्त तैयार हो गए। आचार्यवर ने उन्हें नशामुक्ति का संकल्प करवाया। श्री भंवरसिंह राजपूत ने तत्काल बीड़ी का बंडल तोड़कर उसे श्रीचरणों के समक्ष रख दिया। आचार्यवर के गंतव्य की ओर बढ़ने के पश्चात भंवरसिंह ने अपने साथियों से कहा--'आज मैं धन्य हो गया। गुरुजी ने मेरा जीवन बदल दिया।' भंवरसिंह को इतने से ही संतोष नहीं हुआ। उसने अपने घर में रखे बीड़ी के बंडलों को भी नष्ट कर गांव के बाहर कूड़े के ढेर पर फेंक दिया।

वाटी की घाटी चढणी दोहिली

सगरून के ग्रामीणों के जीवन को पावन बना परम श्रद्धेय आचार्यवर वाटी गांव की ओर प्रस्थित हो गए। हरीतिमा से परिपूर्ण पहाड़ों से घिरे मार्गवर्ती अंगोर के तालाब का नयनाभिराम दृष्य यात्रियों की थकान को हर रहा था। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और उन पर स्थित हरे-भरे वृक्षों पर उछल-कूद करती लंगूरों की सेना अपनी कलाबाजियों को स्थगित कर आचार्यवर और उनकी धवल वाहिनी को आश्चर्य से देखते हुए मानों कह रही थी--'हमने तो नहीं, हमारे पूर्वजों ने देखा था, युगों पूर्व एक महामानव मानवता को त्राण देने के उद्दे य से इसी तरह की वन-वीथियों में विचरे थे। सारा संसार उन्हें राम के नाम से जानता है। उसी तरह के कार्य का बीड़ा तुमने भी उठाया है तो हे निर्भीक महापथिक ! तुम्हें हम सबका नमस्कार।'

मेघाच्छन्न आकाश और ठंडी हवा के द्वारा प्रकृति मानों शान्तिदूत महातपस्वी आचार्यवर का अभिनंदन कर रही थी। वाटी की दुरूह घाटी में हर चढ़ाई पर आचार्य भिक्षु का एक दोहा बार-बार स्मृति में आ रहा था--

वाटी री घाटी चढ़णी दोहिली, दोहिलो भूताला रो घाट।
मोड़ी तो पग मोड़े अति घणा, आगे चार तीरथ रो ठाठ ॥

आश्चर्य तो इस बात का हो रहा था कि पक्की सड़क बनने के बावजूद इस घाटी पर चढ़ना मुश्किल प्रतीत हो रहा है तो उस समय जब मार्ग जैसा कुछ था ही नहीं, आचार्य भिक्षु ने इन घाटियों को कैसे पार किया होगा? उनके द्वारा निर्मित उपर्युक्त दोहा इसी ओर संकेत करता है।

दुरूह घाटी को पार कर कुल 6.02 किमी. का विहार कर परम श्रद्धेय आचार्यवर वाटी पधारे। पूज्यवर का स्वागत और अभिनंदन कर एक तेरापंथी परिवार सहित सभी जैन परिवार अति ाय प्रफुल्लित थे। इस एकदिवसीय प्रवास में पचास से अधिक स्थानकवासी परिवारों ने अपने घर खोले। आचार्यवर का प्रवास श्री मांगीलालजी जालमचन्दजी रांका के आवास पर हुआ। हर्षविभोर रांका परिवार अपनी प्रसन्नता को शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर पा रहा था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्य नियोजिकाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'इन्द्रिय विजय का अभ्यास एक बड़ी साधना है। उसके अन्तर्गत खाद्य-संयम भी वांछनीय है। आहार के साथ साधना का गहरा संबंध होता है। वह साधना में सहायक और बाधक दोनों हो सकता है। अतः साधक विवेकपूर्वक अति मात्रा में विगय सेवन से बचे।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मोह को परास्त करने के संघ्र्ा का नाम ही साधना है। साधक भाग्य की चिन्ता को छोड़ सत्पुरुषार्थ करता रहे। धनबल, तनबल, वचनबल भी आत्मबल के बिना दुर्बल होते हैं, अतः आत्मबल को विकसित करने का अभ्यास करना चाहिए।'

आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात श्री मांगीलालजी लोढ़ा ने एक सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। जिसकी प्रथम पंक्ति के कुछ अं ा इस प्रकार हैं--'जय बोलो भिक्षु की।' एक स्थानकवासी भाई के मुख से निकलने वाले गीत के ये बोल नि चत रूप से अहिंसा यात्रा के असाम्प्रदायिक वातावरण का ही प्रभाव है। श्री एकलिंगजी लोढ़ा ने संपूर्ण गांव की ओर से आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। नशामुक्ति के लिए आचार्यवर के आह्वान पर अनेक ग्रामीणों ने न ा छोड़ने का संकल्प व्यक्त किया। स्थानीय ठाकुर देवीसिंहजी चौहान ने बीड़ी का आजीवन और शराब का एक वर्ष के लिए प्रत्याख्यान कर दिया। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यवर ने एक तेरापंथी सहित गांव के सभी जैन घरों का स्पर्श किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम के पश्चात पारिवारिक सेवा का क्रम चला। स्थानीय लोगों ने आचार्यवर से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी प्राप्त किया।

युद्धभूमि में शान्तिदूत

10 जून। शान्तिदूत आचार्यश्री महाश्रमण ने आज प्रातः ऐतिहासिक भूमि हल्दीघाटी के लिए विहार किया। मध्यवर्ती कालोड़ा गांव में स्थानीय जैन परिवारों के अनुरोध पर आचार्यवर ने वहां कुछ देर विराज कर सबको पावन प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर ने यहां के अनेक घरों को अपने चरण स्पर्श से पावन भी किया। नौ कि. मी. का विहार कर आचार्यवर हल्दीघाटी से लगभग दो किमी. पूर्व स्थित महाराणा प्रताप संग्रहालय में पधारे। श्री मोहनजी श्रीमाली ने अपने प्रांगण में आचार्यवर का अभिनंदन किया। इस संग्रहालय में जहां एक ओर हल्दीघाटी युद्ध, महाराणा प्रताप के जीवन के जीवन से संबंधित विविध प्रसंगों, मेवाड़ी राजवंश की विभिन्न घटनाओं आदि को डाक्युमेंट्री फिल्म, लाइट एंड साउण्ड शो, मूर्तियों, चित्रों आदि के माध्यम से दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर मेवाड़ की विभिन्न जातियों की परम्परागत जीवनशैली को झांकियों आदि के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

पूज्य आचार्यवर ने संग्रहालय के दोनों भागों का अवलोकन किया। हल्दीघाटी की झांकी के अवलोकन के दौरान बताया गया--'18 जून 1576 को महाराणा प्रताप और मुगल बादशाह अकबर के सेनापति मानसिंह के बीच भीाण युद्ध प्रारंभ हुआ। इस एकदिवसीय युद्ध में शाहीबाग में पडाव डाले लगभग चालीस हजार सैनिकों वाली मुगल सेना पर प्रताप की लगभग बारह हजार सैनिकों की सेना ने अचानक जोरदार आक्रमण किया। सेनापति हकीमखां शूर के नेतृत्व में प्रताप की सेना के हरावल (अग्रिम) दस्ते ने मुगल सेना को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। मैदान छोड़कर भागती मुगलों की फौज दो कोस तक भागने के बाद जब खमनोर पहुंची तो अपनी सेना के टूटे हुए मनोबल को पुनः बहाल करने के लिए मनोवैज्ञानिक उपाय काम में लेते हुए बड़ी चतुराई से मुगल पठान मिहतर खां ने अपनी सेना में अफवाह फैला दी--बादशाह अकबर स्वयं अतिरिक्त सेना लेकर आ पहुंचे हैं। इस संवाद ने बिखरी और हताश मुगल सेना में नये जोश का संचार कर दिया। वे पुनः संगठित हुए और पीछा करते हुए प्रताप की सेना जब खमनोर पहुंची तो दोनों सेनाओं के बीच फिर से भयंकर युद्ध प्रारंभ हो गया। पूरा मैदान लाशों से पट गया और वहां खून की नदी-सी बह चली। यहीं पर महाराणा प्रताप और मानसिंह के बीच निर्णायक युद्ध हुआ। प्रताप के घोड़े चेतक ने अपने आगे के दोनों पैर मानसिंह के हाथी के मस्तक पर टिका दिये और तभी प्रताप ने अपने भाले का भरपूर वार मानसिंह पर किया। मानसिंह की किस्मत ने उसका साथ दिया और उसने हाथी के हौदे में छिपकर किसी तरह स्वयं को बचा लिया। लेकिन मानसिंह के प्रशिक्षित हाथी ने अपनी सूंड़ में पकड़ी तलवार से चेतक के एक पैर को बुरी तरह से जख्मी कर दिया। और इसी के बाद युद्ध का पासा पलट गया। बड़ी विषम स्थिति पैदा हो गई। तभी बड़ी सादड़ी के राजपूत ठिकानेदार और प्रताप के हमशक्ल झाला मान ने परिस्थिति की विकटता को भांप कर विद्युत गति से प्रताप का मुकुट अपने सिर पर धारण कर लिया और महाराणा से युद्धभूमि छोड़ सुरक्षित निकल जाने का अनुरोध किया।

घायल चेतक ने स्वामिभक्ति का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पांच कोस तक अपनी तीन टांगों पर दौड़ लगाई और अंत में बाईस फीट चौड़े नाले को एक छलांग में पार करने के बाद अपने प्राणों की आहुति

दे दी। कहा जाता है अपने प्रिय घोड़े का सिर गोद में लेकर प्रबल प्रतापी प्रताप जीवन में पहली बार रोया। भाग्य और परिस्थितियां दोनों ही महाराणा के प्रतिकूल थे। उस समय उन्होंने अनेक कठिन संकल्प स्वीकार किए। जिस दर्रे से प्रताप की सेना ने मुगल सेना पर आक्रमण किया था, उसके हल्दी के रंग वाली मिट्टी के कारण कालान्तर में इतिहासकारों ने उसका नाम 'हल्दीघाटी' रख दिया। इसी तरह खमनोर का वह मैदान जो रक्त और क्षत-विक्षत ला ों से भर गया था, 'रक्त तलाई' और वह नाला जिसे चेतक ने तीन टांगों से पार किया था, 'चेतक नाला' कहलाया।

आचार्यवर के इस प्रवास में आसपास के अनेक क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में पहुंचे और पूज्यवर का दर्शन लाभ लेने के साथ-साथ ऐतिहासिक स्थली के विभिन्न दृश्यों की अवगति भी प्राप्त की।

वचन निभाने आए खमनोर

सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यवर ने खमनोर जाने का निर्णय लिया। यद्यपि पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज का रात्रिकालीन प्रवास भी हल्दीघाटी में निर्णीत था। किन्तु कुछ दिन पूर्व खमनोर के लोग श्रीचरणों में पहुंचे और हल्दीघाटी से खमनोर की अनुमानित दूरी तीन किमी. बताते हुए रात्रि प्रवास खमनोर में करने का भाव भरा अनुरोध किया। आचार्यवर ने उन्हें रात्रिवास खमनोर में करने की स्वीकृति दे दी। बाद में जब उस दूरी को वाहन द्वारा मापा गया तो वह बताई गई दूरी से दुगुनी अर्थात छह किमी. निकली। मार्ग व्यवस्थापकों और स्वयं खमनोरवासियों ने यथार्थ दूरी की अवगति देते हुए रात्रि प्रवास हल्दीघाटी में ही करने का अनुरोध किया। परन्तु महातपस्वी आचार्यवर ने फरमाया--'हमने खमनोरवासियों को रात्रि प्रवास का वचन दे दिया है। उसे पूरा करने के लिए सायं हल्दीघाटी से खमनोर के लिए विहार करने का भाव है।' आचार्यवर की इस वचननिष्ठा से गद्गद होकर खमनोरवासी श्रीचरणों में श्रद्धाप्रणत हो गए।

आज सायंकालीन विहार से पूर्व अचानक आका ा बादलों से आच्छादित हो गया और हल्की फुहार के साथ मंद हवा के झोंके चलने लगे। आचार्यवर ने निश्चित समय पर विहार किया और हल्दीघाटी, चेतक नाला और चेतक स्मारक आदि का अवलोकन किया। छह किमी. का विहार कर आचार्यवर खमनोर पधारे। यहां रात्रिप्रवास श्री प्रकाशजी मांडोत के आवास पर रहा। आचार्यवर के पदार्पण से स्थानीय जैन समाज में उत्सव का-सा माहौल था।

रात्रिकालीन कार्यक्रम रक्त तलाई मैदान में स्थित पंचायत समिति परिसर में आयोजित हुआ। स्थानीय लोगों ने अपने उल्लासमय भावों को अभिव्यक्ति दी। पूज्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात कवि सम्मेलन का भी उपक्रम रहा।

मोलेला में एकदिवसीय प्रवास

11 जून। आचार्यवर ने आज खमनोर के अनेक घरों का स्प ा किया और ऐतिहासिक रक्त तलाई मैदान में भी पधारे। इस मैदान का अधिकांश भाग अब एक रमणीय उद्यान में परिवर्तित हो चुका है और प्रशासन द्वारा अब इसे एक ऐतिहासिक स्मारक का रूप दे दिया गया है। उद्यान का अवलोकन करने के पश्चात 3.05 किमी. का विहार कर आचार्यवर मोलेला गांव पधारे। स्थानीय लोगों ने यहां के प्रसिद्ध वास्तुशिल्प के बारे में अवगति दी। मिट्टी से बनी मूर्तियां यहां के लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन हैं। लोगों के अनुरोध पर आचार्यवर अनेक ि ाल्पकारों के घर पधारे और उनकी मृत्तिकला को देखा। विशाल और भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर गांव में पधारे। यहां आपका प्रवास महावीर भवन में हुआ। पूज्यवर को अपने बीच पाकर चौदह तेरापंथी परिवारों सहित संपूर्ण जैन समाज आह्लाद की अनुभूति कर रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी के भीतर मोह और ममत्व का भाव रहता है। वह उसके लिए दुःख का हेतु बन जाता है। अनेक बार ममत्वभाव के कारण व्यक्ति हिंसा भी कर लेता है। साधु के लिए तो वह त्याज्य होता ही है, गृहस्थ भी उसे छोड़ने अथवा उसके अल्पीकरण का प्रयास

करे। परिवार का भरण-पोषण और सेवा गृहस्थ का सांसारिक कर्तव्य होता है, किन्तु जहां तक संभव हो, वह मोहभाव से दूर रहने का अभ्यास करे। उसे छोड़ने का प्रयत्न धर्म की साधना है। वह साधना अचिन्त्य और असंकल्प्य फल देने वाली होती है।' अपने मंगल प्रवचन के पश्चात आचार्यवर ने ग्रामीणों को नशामुक्ति हेतु अभिप्रेरित किया। अनेक ग्रामीणों ने नशा छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया।

प्रवचन के पश्चात सी.आई.डी. जोन उदयपुर के एडीशनल एस.पी. श्री राजेन्द्रसिंह राठौड़ और सी.आई श्री चांदमल सिगारिया श्रीचरणों में उपस्थित हुए और मार्गदर्शन प्राप्त किया। मध्याह्न में स्थानीय तेरापंथी परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यवर ने सबको पावन पाथेय प्रदान किया।

कोशीवाड़ा में पुनरागमन

12 जून। आज प्रातः मोलेला के शताधिक घरों का स्पर्श करते हुए आचार्यवर ने कोशीवाड़ा के लिए विहार किया। कच्चे मार्ग वाले इस विहार पथ में अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया। लगभग 8.05 किमी. का विहार कर दो दिवसीय प्रवास हेतु आचार्यवर कोशीवाड़ा पधारे। यहां आपका प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ। इस यात्रा में अब तक कोशीवाड़ा ही एकमात्र ऐसा गांव है, जहां आचार्यवर दूसरी बार प्रवास हेतु पधारे। स्थानीय लोग आराध्य के इस महनीय अनुग्रह को प्राप्त कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। सरपंच श्रीमती सोहनदेवी कोठारी के नेतृत्व में गांववासियों ने आचार्यवर का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में महाश्रमणीजी एवं मुख्यनियोजिकाजी के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने 'स्वस्थ परिवार का आधार व्यसनमुक्ति' विषय पर अपने मंगल प्रवचन में कहा--'पारिवारिक संक्लेश का एक कारण व्यसन बन जाता है। व्यसन अनेक समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। नशा जीवन की एक बड़ी दुर्बलता है और इसे जीवन का 'कलंक' भी कह सकते हैं। यह जीवन को अशोभित करने वाला होता है। आत्ममलिनता, अस्वास्थ्य, अर्थ का अपव्यय, अपराध आदि उसके दुष्परिणामों को जान कर उसे छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। पारिवारिक स्वस्थता के लिए भी इसका परित्याग आवश्यक है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'अनेक लोग संसार को छोड़कर साधु बन जाते हैं। आपके इस कोशीवाड़ा के मुनि अनु ासनकुमार और मुनि मृदुकुमार छोटी अवस्था में विरक्त होकर दीक्षित हो गए। ये दुधमुंहे बच्चे माता-पिता के मोह से विरक्त होकर दीक्षा के लिए मानो कृतसंकल्प हो गए, घर-गांव और संसार को छोड़कर साधना के पथ पर अग्रसर हो गए। इनसे प्रेरणा लेकर कोशीवाड़ा के लोगों में नशामुक्ति का संकल्प तो अव य जागना चाहिए।' आचार्यवर के आह्वान पर अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कि ान डागलिया, श्री विजय रेबारी और श्रीमती मीना डागलिया ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। गत दिनों दिवंगत बीदासर के शासनसेवी श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री हनुमानमलजी नाहटा के परिवार जन संबल प्राप्त करने हेतु श्रीचरणों में उपस्थित हुए। उनकी संसारपक्षीया पुत्री साध्वी शुभ्रयशाजी ने प्रस्तुत संदर्भ में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। परमाराध्य आचार्यवर ने कहा--'हनुमानमलजी नाहटा एक श्रद्धालु श्रावक थे। वे केन्द्र में लंबी उपासना किया करते थे। उनका जीवन सादगीपूर्ण था। उनके परिवार की एक बड़ी सेवा है--साध्वी शुभ्रयशाजी। ये अनेक विशेषताओं से संपन्न और आगम साहित्य आदि अनेक कार्यों से जुड़ी हुई साध्वी है। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रातराश गोचरी की सेवा की और अब हमारी सेवा कर रही है। यह सेवा और अच्छा कार्य करती रहें। नाहटा परिवार में धार्मिक संस्कार पुष्ट होते रहें।'

प्रातः उमस भरी भीषण गर्मी का अहसास कराने वाला मौसम शाम तक बादलों की गड़गड़ाहट के साथ हल्की बारिश में परिवर्तित हो गया। वातावरण में शीतलता आ गई। मध्य रात्रि में तेज वर्षा होने से हल्की ठंड का आभास होने लगा।

13 जून। कोशीवाड़ा प्रवास का दूसरा दिन। 'पारिवारिक जीवन और भ्रूणहत्या मुक्ति' विषय पर आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री किशन डागलिया और मुनि जयंतकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'पिछले कुछ समय से भ्रूणहत्या की बात यदा-कदा कर्णगोचर होती रहती है। उसके अनेक कारण हो सकते हैं अनेक सामाजिक परिस्थितियां भी इस घिनौने कृत्य

के लिए विवश कर देती होंगी। दहेज प्रथा भी उसका एक प्रमुख कारण प्रतीत हो रहा है। यदि इस प्रथा को निर्मूल कर दिया जाए तो भ्रूणहत्या का एक बड़ा कारण निवारित हो सकता है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'गृहस्थ का जीवन भी शान्तिपूर्ण हो। पाप और अपराध करने वाला अशान्त जीवन जीता है। साधु स्वयं शान्ति का जीवन जीते हैं और दूसरों को भी इस ओर अग्रसर करने का प्रयास करते हैं। समता में प्रतिष्ठित व्यक्ति अवांछनीय कार्यों से बच जाता है और उसका जीवन शान्तिपूर्ण रहता है।'

आचार्यवर की प्रेरणा से उपस्थित लोगों ने कन्या भ्रूणहत्या न करने का संकल्प व्यक्त किया। आचार्यवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के शेष तीन आयामों से संबद्ध संकल्प करवाए।

सरदार ाहर निवासी शासनसेवी श्री डालचन्दजी चंडालिया के स्वर्गवास के बाद उनके पारिवारिक जन सम्बल प्राप्त करने हेतु श्रीचरणों में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने उनके विषय में उद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'डालचन्दजी सरदारशहर के अच्छे श्रावक थे। साधु-साध्वियों की मार्ग-सेवा का भी दायित्व निभाया करते थे। वे अणुव्रत के भी एक सक्रिय कार्यकर्ता थे। अनेक रूपों में उन्होंने शासन की सेवा की। उनके पारिवारिक जन उनके संस्कारों को आगे बढ़ाते रहें। पूरे परिवार में धार्मिक भावना पुष्ट होती रहे।'

पूज्यवर का दोदिवसीय कोशीवाड़ा प्रवास अत्यन्त कार्यकारी रहा। प्रवासियों के साथ-साथ आसपास के अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने कोशीवाड़ा पहुंच कर दर्शन और उपासना का लाभ लिया। स्थानीय जैनेतर समाज ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन, प्रवचन श्रवण और अनेक संकल्प स्वीकार कर धन्यता की अनुभूति की। इस प्रवास की सफलता में प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री किशन डागलिया, कार्याध्यक्ष श्री रोशन डागलिया, मंत्री श्री सुरे ाजी राठौड़ आदि पूरी टीम का सक्रिय श्रम रहा। वरिठ श्रावक श्री भंवरलालजी डागलिया परिवार के सहयोग से साहित्य अर्द्धमूल्य पर उपलब्ध रहा। साहित्यप्रेमियों ने इस छूट का पूरा लाभ उठाया। दोनों दिन हल्की वर्षा के कारण मौसम भी सुरम्य बना रहा।

लगा धर्म का ठाठ

14 जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः कोशीवाड़ा से 4.05 किमी. का विहार कर गांव गुड़ा पधारे। मार्ग में कोशीवाड़ा की सरपंच श्रीमती सोहनदेवी रेबारी का आवास भी पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बना। अनेक लोगों ने इस पावन जंगम तीर्थ से नशे का प्रत्याख्यान कर अपने जीवन को पावन बनाया। आचार्यवर के गांव गुड़ा पदार्पण से स्थानीय दस तेरापंथी परिवारों का हर्षोल्लास अपने चरम पर था। भव्य स्वागत जुलूस में उनकी श्रद्धा का ज्वार प्रतिबिंबित हो रहा था। मूर्तिपूजक समाज ने भी आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। आचार्यवर ने स्थानीय सरपंच श्री अनिल सोनी के आवास पर पधारे तथा प्रायः सभी जैन घरों का स्पर्श भी किया। जैन मन्दिर का अवलोकन कर उपाश्रय स्थित वयोवृद्ध पन्यास श्री रत्नाकरविजयजी से मिलते हुए आचार्यवर राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। आजका प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने लोगों को संबोधित करते हुए गुरुदेव तुलसी के गांव गुड़ा पदार्पण से जुड़े प्रसंगों को प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'गुरु शिष्य या साधक के लिए पथदर्शक के रूप में होते हैं। शिष्य के मन में आचार्य के प्रति परम सम्मान की भावना रहे। उसका कर्तव्य है कि गुरु के आदेश के प्रति पूर्ण समर्पित रहे। वे गुरु धन्य और भाग्यशाली होते हैं, जिन्हें विनीत शिष्य प्राप्त होते हैं।' आचार्यवर ने आगे कहा--'राग-द्वेष की लहरें जब तक शान्त नहीं होती हैं, तब तक आत्मा का दर्शन नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार पानी के भीतरी भाग को देखने के लिए उसकी स्थिरता और स्वच्छता आवश्यक होती है, उसी प्रकार आत्मद ान के लिए मन की स्थिरता और स्वच्छता अपेक्षित होती है। साधक की भक्ति, स्वाध्याय, ध्यान आदि सारी साधना वीतरागता की प्राप्ति के लिए हो। वीतरागता का जितना-जितना विकास होगा, उतना-उतना आत्मनैर्मल्य विकसित होगा। अतः साधक अभ्यास और साधना के द्वारा राग-द्वेश को दुर्बल करने का प्रयास करे।'

इस कार्यक्रम में मूर्तिपूजक सम्प्रदाय की साध्वी सुरेखाजी आदि पांच साध्वियां उपस्थित हुईं। आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात साध्वी स्वरूपरत्नाश्रीजी ने आचार्यवर के दर्शन से उत्पन्न प्रसन्नता को अभिव्यक्त किया। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के संदर्भ में अवगति दी। श्री राहुल

एवं श्री रमेश मेहता ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष श्री पुखराजजी धोका ने आचार्यवर के औदार्य को आदर्श बताते हुए अपने समाज की ओर से भावपूर्ण स्वागत किया। डा. वंदना मेहता ने 'जैन आगम ग्रंथों में पंचमतवाद' नामक अपना शोधग्रंथ तथा स्वयं द्वारा संपादित 'आगम दार्शनिक मतवाद कोश' के विषय में प्रस्तुति देते हुए परिजनों के साथ उसे श्रीचरणों में उपहृत किया। समण सिद्धप्रज्ञजी ने अपनी हैदराबाद यात्रा में संपन्न कार्यों की अवगति दी।

काठमाण्डू (नेपाल) प्रवासी श्री तोलारामजी दूगड़ के देहावसान के बाद पारिवारिक जन संबल प्राप्ति हेतु श्रीचरणों में उपस्थित हुए। पूज्य आचार्यवर ने उनके संदर्भ में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'तोलारामजी का व्यक्तित्व व्यापक था। उनका अनेकानेक संस्थाओं से संबंध था। महासभा के अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने अपनी सेवाएं दीं। वे एक अच्छे कार्यकर्ता थे। उनके जाने से नेपाल में एक कार्यकर्ता श्रावक का स्थान रिक्त हो गया। परिवार के लोग इस कमी को पूरा करने का प्रयास करें और अपने जीवन में धर्म के संस्कारों को पुष्ट बनाते रहें।'

मध्याह्न में दूगड़ परिवार के सदस्यों ने पूज्यवर की उपासना के दौरान अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। स्वर्गीय तोलारामजी के अनुज श्री कि ानलालजी ने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष में प्रथम बार गांव गुड़ा में दर्शन करने के उपलक्ष्य में यहां 551 चन्दन वृक्ष लगाने का संकल्प व्यक्त किया। आचार्यवर से श्री दूगड़ को आध्यात्मिक संबल प्राप्त हुआ।

स्थानीय परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यवर ने सबको धार्मिक संबोध प्रदान किया। गांव गुड़ा के इस एकदिवसीय प्रवास में दिन भर उत्सव का-सा माहौल रहा। न केवल तेरापंथ समाज, अपितु अन्य जैन-अजैन लोगों ने भी भरपूर आध्यात्मिक लाभ उठाया। आचार्यवर ने गांव गुड़ा से कोयल की ओर विहार करते हुए इस प्रवास की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करते हुए एक दोहा फरमाया। वह इस प्रकार है--

गांवगुड़ा लघु गांव में, लगा धर्म का ठाठ।
साधु-साध्वियां पास में, समण-समणियां साथ ॥

राष्ट्रीय ज्ञानशाला शिविर के शिविरार्थी श्रीचरणों में

10 जून को हल्दीघाटी में प्रवास के दौरान अणुविभा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय ज्ञानशाला शिविर के शिविरार्थी श्रीचरणों में उपस्थित हुए। पूज्यवर की सन्निधि में अणुविभा के महामंत्री श्री संचय जैन ने जानकारी देते हुए बताया--प्रतिवर्ष की भांति राजसमन्द स्थित अणुविभा परिसर में आयोजित इस छठे शिविर में चौदह ज्ञानशालाओं के 97 शिविरार्थी संभागी बने। शिविर के दौरान मुनि मोहजीतकुमारजी और ज्ञानशाला सहप्रभारी मुनि हिमांशुकुमारजी ने शिविरार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। राष्ट्रीय ज्ञानशाला संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा की विशेष उपस्थिति और वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री निर्मल नौलखा का प्रशिक्षण शिविर की सफलता में योगभूत रहा। इस शिविर में स्थानीय स्तर के अनेक प्रशिक्षकों ने भी अपनी सेवाएं दीं। शिविरार्थियों ने गीत, कविता, परिसंवाद आदि के माध्यम से अपनी प्रस्तुतियां दीं। पूज्य आचार्यवर ने फरमाया--'ज्ञानार्थी अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें। उसके लिए मात्र सपने ही न देखें, अपितु संकल्प का प्रयोग करें। उनमें बुभ्ूा (कुछ अच्छा बनने की इच्छा) जिज्ञासा (कुछ अच्छा जानने की इच्छा) चिकीर्शा (कुछ अच्छा करने की इच्छा) हो तो एक सुसंस्कारी भावी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है। इस दृष्टि से ज्ञानशाला एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। अणुविभा पिछले कुछ वर्षों से ज्ञानशाला शिविरों का समायोजन कर संस्कार निर्माण का प्रयास कर रही है। राजसमन्द स्थित अणुविभा परिसर सुरम्य और दर्शनीय है। मैंने स्वयं घंटों समय लगा कर इसका अवलोकन ही नहीं, गहनावलोकन किया। ज्ञानशाला और अणुविभा बालपीढ़ी में सुसंस्कार निर्माण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे।'

अमृत महोत्सव वर्ष में आयोज्य प्रतियोगिताओं का शुभारंभ

11 जून को मोलेला में पूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष में आयोज्य प्रतियोगिताओं का शुभारंभ भाषण प्रतियोगिता से हुआ। साहित्य समिति द्वारा ''कैसा हो अमृत महोत्सव का द्वितीय चरण?'' विषय पर आयोजित इस प्रतियोगिता में बाईस साधु-साध्वियां संभागी बने। संभागियों

ने इस प्रतियोगिता के माध्यम से द्वितीय चरण के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में फरमाया--'अमृत महोत्सव की निर्धारित रूपरेखा में ज्ञानाचार के अन्तर्गत अनेक आयामों में एक आयाम है--प्रतियोगिताओं का समायोजन। चिन्तन और भाषण के विकास के उद्देश्य से आयोजित इस प्रतियोगिता में अनेक विचार सामने आए। साधु-साध्वियों में साधना का विकास हो ही, इसके साथ अन्य विकास भी लाभप्रद होता है। अभ्यास के द्वारा वह विकास संभव है।'

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष में आगामी प्रतियोगिताएं

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष में व्यक्तित्व विकास के उद्दे य से साधु-साध्वीवृन्द एवं समणीवृन्द के लिए विविध प्रतियोगिताओं का समायोजन किया जा रहा है। साहित्य समिति द्वारा प्रतिमाह समायोजित होने वाली इन प्रतियोगिताओं में संभागी बनने के लिए गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों को सहज अवसर सुलभ है। बहिर्विहारी साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के लिए भी अग्रांकित प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं--

प्रतियोगिता	विषय	प्राप्ति की अंतिम तिथि	शब्द सीमा
1. निबन्ध प्रतियोगिता	आचार्यश्री महाश्रमण	भाद्रपद शुक्ला 9	न्यूनतम 300 शब्द
2. गीत निर्माण प्रतियोगिता	आचार्यश्री महाश्रमण	कार्तिक शुक्ला 9	न्यूनतम 3 पद्य
3. बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता	बच्चों की समस्याओं का समाधान अथवा संस्कार देनेवाली कहानियां	पौष शुक्ला 9	न्यूनतम 200 शब्द

प्रतिभागियों की दो श्रेणियां निर्धारित की गई हैं--

(1) 20 वर्ष तक का संयम पर्याय (2) 20 वर्ष से अधिक संयम पर्याय

• प्रतिभागी अपने नाम और संयम पर्याय के उल्लेख के साथ निर्धारित विषय पर अपनी रचना निर्धारित तिथि तक केन्द्र में प्रेषित करें।

• एक व्यक्ति की प्रत्येक विधा में एक-एक रचना ही स्वीकार्य होंगी।